JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वैदिक शिक्षा की विशेषताओं का संक्षिप्त मूल्यांकन तथा नई शिक्षा नीति 2020 की मुख्य विशेषताएं

मंजीता त्यागी
शोधार्थिनी
डॉ शैली राणा
एसोसिएट प्रोफेसर
कॉलेज ऑफ एजुकेशन,आई.आई.एम.टी यूनिवर्सिटी मेरठ

सारांश:

वेद शब्द का अर्थ है ज्ञान। वैदिक शिक्षा से तात्पर्य उस ज्ञान से है जो वेदों में सुरक्षित है तथा जिसका उस समय प्रयोग होता था। इन प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में भारत की मूल संस्कृति का ज्ञान सुरक्षित है। वैदिक शिक्षा न तो किताबी ज्ञान पर विश्वास करती थी और न ही यह जीविकोपार्जन का साधन थी। यह पूर्णतः नैतिक और आध्यात्मिक ज्ञान की ओर एक कदम थी। उस समय शिक्षा का अर्थ था कि व्यक्ति को इस प्रकार प्रबुद्ध किया जाए कि उसका सर्वांगीण विकास हो सके। श्रवण, मनन और निदिध्यासन आदि शिक्षा प्राप्ति के साधन थे। जो वेद लिखित रूप में संकलित नहीं थे तथा केवल कंठस्थ थे, उन्हें श्रुति कहा जाता था। इस प्रकार वैदिक साहित्य में शिक्षा शब्द का प्रयोग विद्या, ज्ञान और विनय आदि अर्थों में किया जाता था।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारत केंद्रित शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना की गई है जो अपनी परंपरा, संस्कृति, मूल्यों और लोकाचार को बदलने में अपना बहुमूल्य योगदान देने के लिए तैयार है। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को बिना किसी भेदभाव के बढ़ने और विकसित होने का समान अवसर प्रदान करना और छात्रों में ज्ञान, कौशल, बुद्धिमत्ता और आत्मविश्वास पैदा करके उनके दृष्टिकोण को विकसित करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति से देश की उच्च शिक्षा प्रणाली पर सकारात्मक और दीर्घकालिक प्रभाव पड़ने की उम्मीद है। यह तथ्य कि विदेशी विश्वविद्यालयों को भारत में परिसर खोलने की अनुमति दी गई है, सरकार की एक सराहनीय पहल है। इससे छात्रों को अपने देश में शिक्षा की समग्र गुणवत्ता का अनुभव करने में मदद मिलेगी। बहु-विषयक संस्थान शुरू करने की नीति कला, मानविकी जैसे सभी क्षेत्रों में नए सिरे से ध्यान केंद्रित करेगी और शिक्षा का यह रूप छात्रों को समग्र रूप से सीखने और विकसित करने में मदद करेगा।

परिचय:

शिक्षा शब्द का प्रयोग प्राचीन भारतीय ऋषियों ने व्यापक तथा सीमित दोनों अर्थों में किया है। डॉ. ए.एस. अल्टेकर के अनुसार व्यापक अर्थ में शिक्षा का अर्थ व्यक्ति को सभ्य तथा उन्नत बनाना है। इस दृष्टि से शिक्षा एक आजीवन चलने

वाली प्रक्रिया है। सीमित अर्थ में शिक्षा का अर्थ है वह औपचारिक शिक्षा जो व्यक्ति गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने से पूर्व विद्यार्थी के रूप में गुरु से प्राप्त करता है। इस प्रकार वैदिक काल में शिक्षा का अर्थ व्यक्ति का विकास है।वैदिक काल भारतीय इतिहास का स्वर्णिम काल है, जिसने न केवल हमारी संस्कृति तथा सभ्यता की नींव रखी, बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में भी अद्वितीय योगदान दिया। उस समय 'शिक्षा' शब्द का प्रयोग बहुत व्यापक अर्थ में किया जाता था, जिसमें मनुष्य का समग्र विकास शामिल था। इस काल में शिक्षा को न केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन माना जाता था, बल्कि व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण तथा समाज में उसके योगदान को सुनिश्चित करने का भी महत्वपूर्ण साधन माना जाता था।

डॉ. ए.एस. अल्टेकर वैदिक काल में शिक्षा का व्यापक अर्थ स्पष्ट करते हुए इसे व्यक्ति को 'सभ्य' और 'उन्नत' बनाने की प्रक्रिया बताया है। इस दृष्टि से शिक्षा जीवन भर चलने वाली एक सतत प्रक्रिया है, जो व्यक्ति के जन्म से लेकर उसकी मृत्यु तक विभिन्न रूपों में चलती रहती है। इसमें व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास शामिल होता है। वैदिक काल में शिक्षा का एक सीमित अर्थ भी प्रचलित था, जिसमें औपचारिक शिक्षा शामिल थी। यह शिक्षा व्यक्ति गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने से पूर्व विद्यार्थी के रूप में गुरु से प्राप्त करता था। इस शिक्षा में वेद, उपनिषद, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र और विभिन्न कलाओं का ज्ञान प्रदान किया जाता था। यह शिक्षा व्यक्ति को समाज में अपने कर्तव्यों का पालन करने और सफल जीवन जीने के लिए तैयार करती थी। वैदिक काल में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना था। इस काल में शिक्षा को व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास का आधार माना जाता था। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को समाज का उपयोगी सदस्य बनाने, उसके व्यक्तित्व का विकास करने और उसे मोक्ष प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर करने का प्रयास किया जाता था। इस प्रकार वैदिक काल में शिक्षा को व्यक्ति के समग्र विकास का महत्वपूर्ण साधन माना जाता था। यह शिक्षा व्यक्ति को न केवल ज्ञान प्रदान करती थी, बल्कि उसके व्यक्तित्व का निर्माण भी करती थी तथा उसे समाज का उपयोगी सदस्य बनने के लिए तैयार करती थी।

साहित्य समीक्षा:

डॉ. राधाकृष्णन 2023 ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी"वैदिक शिक्षा: एक अध्ययन" वैदिक शिक्षा के इतिहास, स्वरूप, उद्देश्य, शिक्षण विधियों और पाठ्यक्रम का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करती है। लेखक ने वैदिक साहित्य और अन्य प्राचीन ग्रंथों के आधार पर वैदिक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है। कि वैदिक शिक्षा में रुचि रखने वाले विद्वानों और छात्रों के लिए एक मूल्यवान संसाधन है।इसे वर्तमान परिवेश में पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए ।

"**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020:** एक विश्लेषण" लेखक: प्रो. एम.एम. अंसारी2022प्रकाशक: ओरिएंट ब्लैकस्वानपुस्तकमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विभिन्न प्रावधानों का गहन विश्लेषण करती है। लेखक ने नीति के उद्देश्यों, लक्ष्यों, और प्रस्तावित सुधारों पर विस्तार से चर्चा की है। उन्होंने नीति के कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियों जैसे वित्तीय संसाधन शिक्षकों काप्रशिक्षणऔरआधारभूत संरचना का विकासजैसीसमस्या का समाधान किस तरह से भविष्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 निर्धारित करेगी और इसे पूर्ण रूपेण सफलता प्राप्त होगी ।

डॉ. कपिल देव (2021, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय प्रकाशन)"भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020"एक महत्वपूर्ण कृति है जो भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बीच संबंधों की पड़ताल करती है। यह पुस्तक समकालीन भारतीय शिक्षा में प्राचीन ज्ञान के समावेश के महत्व पर प्रकाश डालती है। लेखक ने अपनी पुस्तक में भारतीय ज्ञान परंपरा की समृद्धता और विविधता का वर्णन किया हैं। उन्होंने वैदिक शिक्षा, बौद्ध शिक्षा, और जैन शिक्षा सहित

विभिन्न भारतीय ज्ञान परंपराओं का उल्लेख किया है। इन परंपराओं में ज्ञान, नैतिकता, और मूल्यों को समान महत्व दिया गया है। लेखक का तर्क है कि इन प्राचीन ज्ञान परंपराओं में आधुनिक शिक्षा के लिए भी महत्वपूर्ण सबक हैं।

डॉ. अनीता शर्मा(2023, रावत पब्लिकेशंस) की पुस्तक "शिक्षा में नवाचार: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में" राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में शिक्षा में नवाचार के महत्व पर प्रकाश डालती है। लेखिका शिक्षण विधियों, पाठ्यक्रम विकास, मूल्यांकन प्रणाली और प्रौद्योगिकी के उपयोग में नवाचार की आवश्यकता पर बल देती हैं। यह पुस्तक शिक्षकों, शिक्षा नीति निर्माताओं और शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी है, जो शिक्षा में नवाचार को बढ़ावा देने के तरीकों की तलाश मैं मिल का पत्थर साबित होगा।

. **डॉ. राकेश कुमार (2022, विज्ञान भारती प्रकाशन)** "वैदिक गणित: एक आधुनिक परिप्रेक्ष्य" वैदिक गणित के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान है। यह पुस्तक वैदिक गणित के विभिन्न सूत्रों और तकनीकों का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में वर्णन करती है, जिससे यह समकालीन गणितीय शिक्षा और अनुसंधान के लिए प्रासंगिक बनती है।डॉ. कुमार अपनी पुस्तक में वैदिक गणित की सरलता, सटीकता और उपयोगिता पर प्रकाश डालते हैं। वह बताते हैं कि कैसे वैदिक गणित के सूत्रों का उपयोग जटिल गणितीय समस्याओं को हल करने के लिए किया जा सकता है। यह न केवल गणना की गति को बढ़ाता है, बल्कि गणितीय अवधारणाओं को समझने में भी मदद करता है।लेखक ने आधुनिक गणित में वैदिक गणित के अनुप्रयोगों के उदाहरण भी दिए हैं। उन्होंने दिखाया है कि कैसे वैदिक गणित का उपयोग बीजगणित, त्रिकोणमिति, और कलन जैसे क्षेत्रों में किया जा सकता है। यह पुस्तक गणित के छात्रों, शिक्षकों और शोधकर्ताओं के लिए एक मूल्यवान संसाधन है, जो वैदिक गणित को आधुनिक गणित के साथ एकीकृत करने में पूर्णत: सफल हैं।वैदिक काल की शिक्षा।"

डॉ. एस. बालमुरुगन और डॉ. आर. राजराजन का लेख 2018"वैदिक काल की शिक्षा" वैदिक शिक्षा प्रणाली का एक संक्षिप्त अवलोकन प्रस्तुत करता है। यह लेख वैदिक शिक्षा की विशेषताओं, लाभों और सीमाओं पर प्रकाश डालता है। वैदिक शिक्षा में समग्र विकास, गुरु-शिष्य परंपरा, अनुभवात्मक शिक्षा और व्यक्तिगत शिक्षा पर जोर दिया गया था। हालाँकि, इस प्रणाली में महिलाओं के लिए शैक्षिक अवसरों की कमी और वैज्ञानिक ज्ञान पर कम जोर जैसी कुछ सीमाएँ भी थीं। यह लेख वैदिक शिक्षा प्रणाली की ताकत और कमजोरियों को समझने में मदद करता है।

दिव्यांश बोर्डिया के टीचमिंट ब्लॉग पोस्ट 2021 "वैदिक शिक्षा का इतिहास" में वैदिक शिक्षा प्रणाली पर प्रकाश डाला गया है। यह प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली वेदों पर केंद्रित थी और इसका उद्देश्य व्यक्तियों का समग्र विकास करना था। वैदिक शिक्षा मौखिक रूप से गुरुकुलों में गुरुओं के साथ रहकर प्रदान की जाती थी। इस शिक्षा में चरित्र निर्माण, अनुशासन और ज्ञान की खोज को प्रमुख महत्व दिया गया। इस पोस्टके अनुसार वैदिक काल में पढ़ाए जाने वाले विषयों (शास्त्र, दर्शन, गणित, खगोल विज्ञान) का भी उल्लेख है, और बताया गया है कि कैसे वर्तमान में इस शिक्षा प्रणाली को अपनाकर बालकों में मौलिक कर्तव्यों की नींव रखी जा सकती है

डॉ. सत्यप्रकाश आर्य(2020, आर्य समाज, नई दिल्ली)की पुस्तक "वैदिक शिक्षा: स्वरूप और प्रभाव" वैदिक काल की शिक्षा प्रणाली का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक वैदिक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं, जैसे कि शिक्षण विधियाँ, पाठ्यक्रम, और मूल्यांकन प्रणाली पर प्रकाश डालती है। लेखक बताते हैं कि वैदिक शिक्षा में मौखिक परंपरा, श्रवण, मनन और निदिध्यासन (चिंतन) को महत्वपूर्ण माना जाता था। पाठ्यक्रम में वेद, उपनिषद, वेदांग, दर्शन, धर्म, नीतिशास्त्र, इतिहास, गणित, खगोल विज्ञान, और आयुर्वेद जैसे विषय शामिलथावैदिक शिक्षा प्रणाली में गुरु-शिष्य परंपरा का महत्वपूर्ण

स्थान था, जिसमें गुरु न केवल छात्रों को ज्ञान प्रदान करते थे, बल्कि उनके चरित्र निर्माण और नैतिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।

डॉ. विनीता सिंह " (2012, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली)वैदिक शिक्षा और संस्कृति" (वैदिक शिक्षा और भारतीय संस्कृति के बीच गहरे संबंधों का विश्लेषण करती है। यह शोध वैदिक शिक्षा के प्रभाव की पड़ताल करता है कि कैसे इसने भारतीय संस्कृति को आकार दिया।पुस्तक में वैदिक शिक्षा और संस्कृति के बीच जटिल और बहुआयामी संबंधों की दर्शाया गया है। तत्पश्चात वैदिक शिक्षा न केवल ज्ञान प्रदान करने का एक माध्यम थी, बल्कि यह भारतीय संस्कृति के मूल्यों, परंपराओं और रीति-रिवाजों को अपने के साथ ही भारतीय संस्कृति को प्रभावित भी किया

वैदिक काल में शिक्षा का महत्व:

प्राचीन भारतीय मानते थे कि शिक्षा वह प्रकाश है जिसके माध्यम से व्यक्ति के सभी संदेह मिट जाते हैं और सभी बाधाएँ दूर हो जाती हैं। यह वह वास्तविक शक्ति है जिसके माध्यम से व्यक्ति की बुद्धि, विवेक और कौशल में वृद्धि होती है। शिक्षा जीवन की वास्तविकता के महत्व को समझने की क्षमता प्रदान करती है, जो व्यक्ति को मोक्ष प्राप्त करने में सहायता करती है। वैदिक शिक्षाविदों ने शिक्षा के वास्तविक महत्व को स्वीकार करते हुए घोषणा की कि- "विद्यामृतमश्नुते"। अर्थात् शिक्षा के माध्यम से अमरता, आनंद और मोक्ष की प्राप्ति संभव है। वैदिक काल के ऋषियों ने सांसारिक दिशा पर भी ध्यान दिया था, इसलिए उन्होंने भौतिक और आध्यात्मिक दोनों दृष्टिकोणों से शिक्षा की व्यवस्था की थी।

"अंधतनः प्रविशन्ति येद्विद्यामुपासते। तो भूयद्व ते तमो येद्विद्यारता।"

वैदिककालीन शिक्षा प्रणाली:

वैदिक काल को दो भागों में विभाजित किया गया था, अर्थात् पूर्व वैदिक काल या ऋग्वेदिक और उत्तर वैदिक (जो ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद आदि के अलावा यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की रचना का काल था)। भारतीय परंपरा के अनुसार ब्रह्मा द्वारा ऋषियों को मंत्रों का ज्ञान दिया गया था। उन मंत्रों को उस ऋषि के पुत्रों और शिष्यों के माध्यम से कुल की वंशावली में संरक्षित किया गया था। इस प्रकार प्रत्येक ऋषि कुल एक छोटे से विद्यालय की तरह था जहाँ छात्रों को ब्रह्मचर्य का पालन करना होता था।

शिक्षकों की विविधता:

वैदिक काल की शिक्षा प्रणाली ने गुरुओं को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया। शिक्षकों के पर्यायवाची शब्द कुलपति, आचार्य, उपाध्याय, प्रवक्त, पाठक, अध्यापक, श्रोत्रिय, गुरु, ऋत्विक, चरक आदि थे, जो उनकी योग्यता के अनुसार थे। आधुनिक संदर्भ में, आचार्य एक प्रोफेसर है, पाठक और प्रवचक पाठक हैं, उपाध्याय एक व्याख्याता है, श्रोत्रिय एक वक्ता है। इसी प्रकार अलग-अलग विषयों के अलग-अलग विशेषज्ञ होते थे। वैदिक समाज में आचार्य या गुरु का पद बहुत प्रतिष्ठित था। वे समाज को शिक्षित करने के साथ-साथ वैदिक और आध्यात्मिक ज्ञान भी देते थे।

विद्यार्थियों का ब्रह्मचर्य जीवन:

वैदिक काल की शिक्षा प्रणाली सादा जीवन और उच्च विचार के सिद्धांत पर आधारित थी। उपनयन संस्कार के माध्यम से आचार्य शिष्य को दूसरा जीवन देते थे और उसे द्विज बनाते थे। वे मृगचर्म और करधनी पहनते थे तथा लंबे बाल रखते थे।

इस प्रकार विद्यार्थी सादा, संयमित और अनुशासित जीवन जीते थे। विद्यार्थी के लिए ब्रह्मचारी, अन्तर्वासी, शिष्य, मानवक आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता था। ब्रह्मचारियों के लिए मिक्षा, आचमन, प्राणायाम, मार्जन, गायत्रीपाठ, वेदाध्ययन, अभिवचन आदि का प्रावधान था। विभिन्न शाखाओं के विशिष्ट विद्यार्थियों के लिए भिन्न-भिन्न संज्ञाओं का प्रयोग किया जाता था। उदाहरण के लिए, तैत्तिरीय आचार्य द्वारा प्रचारित तैत्तिरीय शाखा के विद्यार्थी तैत्तिरीय कहलाते थे। विद्यार्थी की अध्ययन अवधि 12 वर्ष से 32 वर्ष तक होती थी, यह आजीवन भी हो सकती थी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020:

भारत प्राचीन काल से ही विश्व गुरु रहा है। नालंदा, तक्षशिला आदि उच्च स्तरीय शिक्षा केंद्रों के बल पर इसका पूरे विश्व में सम्मान था। देश-विदेश से छात्र यहां शिक्षा ग्रहण करने आते थे। शिक्षा केंद्र ही वह केंद्र बिंदु है जहां से राष्ट्र का निर्माण और विनाश दोनों संभव हो सकता है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को सहभागी बनाया गया है। जिसमें 2 लाख सुझावों को ध्यान में रखा गया है। इस नीति में न केवल वर्तमान युवा पीढ़ी को ध्यान में रखा गया है बल्कि आने वाली पीढ़ी की अपेक्षाओं, आकांक्षाओं और चुनौतियों का भी ध्यान रखा गया है। उच्च शिक्षा में सामान्य नामांकन अनुपात को 26.3 प्रतिशत से बढ़ाकर 2035 तक 50 प्रतिशत किया जाना है। उच्च शिक्षा में सर्टिफिकेट, डिप्लोमा और डिग्री कोर्स शामिल किए जाएंगे। देश में 34 साल बाद नई शिक्षा नीति आई है जो शोध, नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देती है। सरकार नई शिक्षा नीति के अनुरूप 45 हजार से अधिक महाविद्यालयों और 15 लाख से अधिक विद्यालयों में परिवर्तन लाने का प्रयास कर रही है। सरकार तेजी से बदलते सामाजिक-आर्थिक वैश्विक परिवेश में देश के युवाओं को सक्षम बनाने का प्रयास कर रही है। नई नीति का विजन ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित करना है जिसमें भारतीय परंपराओं और मूल्यों को स्थान मिले। शिक्षा प्रणाली में इंडिया की बजाय भारत की झलक दिखनी चाहिए। उच्च शिक्षा में सरकार द्वारा किए जा रहे व्यय को अधिक तार्किक और लक्ष्योन्मुखी बनाने की जरूरत है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, जिसे भारत के केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 29 जुलाई 2020 को अनुमोदित किया था, भारत की नई शिक्षा प्रणाली के लिए दृष्टिकोण को रेखांकित करती है। नई शिक्षा नीति 2020 ने पिछली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 का स्थान लिया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्राथमिक से उच्च शिक्षा के साथ-साथ ग्रामीण और शहरी भारत दोनों में व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए एक व्यापक रूपरेखा तैयार करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य 2021 तक भारत की शिक्षा प्रणाली को बदलना है और यह नीति 2020 भारत को बदलने में सीधे योगदान देती है और भारतीय लोकाचार में निहित शिक्षा प्रणाली को देखती है। इसका उद्देश्य सभी को धर्म, लिंग, जाति या पंथ के किसी भी भेदभाव के बिना बढ़ने और विकसित होने के लिए एक समान मंच प्रदान करना और सभी को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करके मौजूदा जीवंत ज्ञान समाज को बनाए रखना और उसका पोषण करना है। नीति में परिकल्पना की गई है कि हमारे संस्थानों के पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति से छात्रों में मौलिक कर्तव्यों और संवैधानिक मूल्यों के प्रति सम्मान की भावना, राष्ट्र और बदलती दुनिया के साथ जुड़ाव की भावना पैदा होनी चाहिए। नीति का विजन शिक्षार्थियों में न केवल विचार बल्कि ऐसे मूल्य और दृष्टिकोण विकसित करना है जो मानवाधिकारों, सतत विकास और जीवन का समर्थन करते हों और वैश्विक कल्याण के प्रति जिम्मेदार प्रतिबद्धता रखते हों, जिससे वे वास्तव में वैश्विक नागरिक की छवि पेश कर सकें।

एनईपी 2020 की परिकल्पना उच्च शिक्षा क्षेत्र में सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) को मौजूदा 26 प्रतिशत से बढ़ाकर 2030 तक 50 प्रतिशत करने के लिए की गई थी। इसका उद्देश्य ओपन और डिस्टेंस लर्निंग, ऑनलाइन शिक्षा और शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ाने के लिए बुनियादी ढांचे को मजबूत करके छात्रों के समग्र व्यक्तित्व का निर्माण करना है। इसके अलावा देश में शोध कार्यों को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एनआरएफ) की स्थापना की जाएगी। देश भर के उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए एकल नियामक के रूप में परिकल्पित एक राष्ट्रीय प्रत्यायन परिषद (एनएसी) की स्थापना की जाएगी। भारतीय उच्च शिक्षा परिषद (HECI) में विभिन्न भूमिकाएं निभाने के लिए कई कार्यक्षेत्र होंगे। सभी सरकारी भर्ती परीक्षाओं के लिए एक राष्ट्रीय भर्ती एजेंसी और समान स्तर की विभिन्न भर्ती परीक्षाओं के लिए एक सामान्य पात्रता परीक्षा (CET) की स्थापना की जाएगी।

इस विजन को बढ़ाने के लिए प्रयास किए जाएंगे। इसके अलावा, इंडोलॉजी, भारतीय भाषाएं, आयुष चिकित्सा पद्धति, योग, कला, संगीत, इतिहास, संस्कृति और आधुनिक भारत, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और उससे आगे, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रासंगिक पाठ्यक्रम, सामाजिक जुड़ाव के लिए सार्थक अवसर, गुणवत्तापूर्ण आवासीय सुविधाएं और ऑन-कैंपस सहायता आदि विषयों में पाठ्यक्रम और कार्यक्रम वैश्विक गुणवत्ता मानकों के इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बढ़ावा दिए जाएंगे।

साइबर सुरक्षा में शिक्षा और कौशल:

विश्व आर्थिक मंच की वैश्विक जोखिम रिपोर्ट 2021 के अनुसार, साइबर सुरक्षा विफलता दुनिया के लिए चौथा सबसे बड़ा खतरा है। चूंकि चल रही महामारी के कारण शिक्षा और सीखना पहले से ही साइबरस्पेस में चला गया है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति की गोपनीयता और सुरक्षा की रक्षा करना अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। इस प्रकार, चूंकि डिजिटलीकरण को अपनाना केंद्र स्तर पर है, इसलिए हमारे नेटवर्क और साइबरस्पेस को सुरक्षित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्तमान परिदृश्य में, यह प्रासंगिक हो जाता है कि 'साइबर सुरक्षा लचीलापन' के लिए क्षमता निर्माण को प्रमुख महत्व दिया जाए और सीखने की धारा के बावजूद उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए।

राष्ट्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी मंच (NETF):

नई शिक्षा नीति 2020 के तहत स्थापित किए जाने वाले NETF की परिकल्पना सही दिशा में एक कदम है। शिक्षण-शिक्षण वितरण के सभी आयामों में गुणवत्ता वाले एड-टेक उपकरण शैक्षणिक संस्थानों को जल्दी से अनुकूलित करने में मदद करेंगे। साइबर सुरक्षा मानकों का पालन करने, फायरवॉल और घुसपैठ का पता लगाने वाले सिस्टम (IDS) को अपनाने के अलावा, गोपनीयता और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अंतर्निहित साइबर सुरक्षा लचीलेपन के साथ ओपन सोर्स डेवलपमेंट प्लेटफॉर्म पर स्वदेशी एड-टेक टूल होस्ट करने की आवश्यकता है। इससे प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत गोपनीयता की रक्षा होगी।

इस शोध में आधुनिक शिक्षा में वैदिक शिक्षा के तत्वों को शामिल किया गया है। भविष्य में इस बात पर शोध किया जा सकता है कि वैदिक शिक्षा के कुछ तत्व, जैसे नैतिक मूल्यों और सर्वांगीण विकास पर जोर, आधुनिक शिक्षा में कैसे शामिल किए जा सकते हैं।

इस शोध में नई शिक्षा नीति 2020 में वैदिक शिक्षा की प्रासंगिकता को परिभाषित किया गया है। इसके अलावा नई शिक्षा नीति 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन में आने वाली चुनौतियों का भी अध्ययन किया जा सकेगा।

सुझाव:

शोध में वैदिक शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के शैक्षणिक माहौल की समीक्षा की गई है। इसके अलावा भविष्य में शिक्षा और उद्योग के बीच संबंधों को कैसे मजबूत किया जा सकता है, इस पर शोध किया जा सकता है, ताकि छात्रों को रोजगार के लिए बेहतर तरीके से तैयार किया जा सके।शोध में वैदिक शिक्षा के आधार पर शिक्षा को वेदों पर आधारित बताते हुए शिक्षा के स्वरूप को बताया गया है। इसके अलावा शिक्षा में तकनीक के इस्तेमाल को और अधिक प्रभावी कैसे बनाया जा सकता है, इस पर शोध किया जा सकता है।वर्तमान में शिक्षा में समावेशी माहौल के आधार पर वंचित और हाशिए पर पड़े छात्रों सहित सभी छात्रों को समान शिक्षा के अवसर कैसे प्रदान किए जा सकते हैं, इस पर शोध किया जा सकता है।

वैदिक शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की आलोचनात्मक तुलना की गई है। साथ ही तुलना करके दोनों की खूबियों और खामियों का पता लगाया जा सकता है।आज के समाज में वैदिक शिक्षा के मूल्यों के महत्व को समझाया गया है। इसके अलावा, इस बात पर भी शोध किया जा सकता है कि वैदिक शिक्षा के मूल्यों जैसे ईमानदारी, अनुशासन और गुरु के प्रति सम्मान को आज के समाज में कैसे बढ़ावा दिया जा सकता है।नई शिक्षा नीति 2020 का छात्रों के सीखने के परिणामों पर प्रभाव: नई शिक्षा नीति 2020 के लागू होने के बाद छात्रों के सीखने के परिणामों में क्या बदलाव आए हैं, इसका अध्ययन किया जा सकता है।

भारतीय ज्ञान प्रणालियों को शिक्षा में शामिल किया गया है। इसके अलावा, इस बात पर भी शोध किया जा सकता है कि भविष्य में आधुनिक शिक्षा में योग, आयुर्वेद और खगोल विज्ञान जैसी भारतीय ज्ञान प्रणालियों को कैसे शामिल किया जा सकता है।

निष्कर्ष-

वैदिक काल में ज्ञान अर्जित किया जाता था। गुरुकुलों में सभी को चिंतन और मनन के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। उस समय वेदों का श्रवण, मनन और चिंतन किया जाता था, इसलिए इन तीन तरीकों से आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता था। अथर्ववेद में उल्लेख है कि इसमें अध्यात्मवाद और सहानुभूति जादू का वातावरण है। इसका सांस्कृतिक स्तर ऋग्वेद से भी निम्न है तथा जो आर्यों के अपयश प्राप्त धर्म से निकला है तथा जिसमें अनेक अनार्य तत्व सम्मिलित हैं। आज भी देश में बिना मान्यता प्राप्त विद्यालय संचालित हो रहे हैं। शिक्षकों और विद्यार्थियों का अनुपात समान नहीं है। शिक्षकों को गैर शैक्षणिक कार्यों में लगाया जाता है। ये महत्वपूर्ण विषय हैं, जिन पर केंद्र और राज्य सरकारों को ध्यान देना चाहिए। आज तकनीकी शिक्षा में विज्ञान और इंटरनेट से संबंधित विषय अंग्रेजी में ही पढ़ाए जाते हैं। जिनका हिंदीकरण आसान काम नहीं है। ऐसे में यदि हमारा पूरा ध्यान हिंदी, मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं पर ही रहेगा, तो देश में रोजगार के अवसरों में कमी आएगी और हम तकनीकी और आर्थिक विकास के मामले में पिछड़ जाएंगे। कल्याणकारी राष्ट्र की प्रगति और बेहतर भविष्य के लिए युवाओं को ऐसी शिक्षा प्रदान करने की नीति होनी चाहिए, जिससे वे भविष्य में होने वाले बदलावों में खुद को समायोजित करने में सक्षम हों।

ताकि ऐसा करके सभी अपना विकास कर सकें। इसके लिए सभी राज्य सरकारों और केंद्र सरकार को दलगत राजनीति से ऊपर उठकर सोचने की जरूरत है। नई शिक्षा नीति 2020 को इस तरह से लागू किया जाना चाहिए कि सभी को विकास

के उचित अवसर मिलें। अंततः पूर्ण रूप का अध्ययन करने के बाद यह कहा जा सकता है कि वैदिक शिक्षा और नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षा विषयों को याद करने, समय सीमा को पूरा करने और अंक प्राप्त करने से कहीं अधिक है बल्कि शिक्षा का वास्तविक अर्थ ज्ञान, कौशल मूल्यों को प्राप्त करना और लगातार काम करना और उस क्षेत्र में प्रगति करना है जिसमें व्यक्ति अपनी रुचि रखता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

- बीरेंद्र सिंह एवं कुकन देवी, उच्च शिक्षा के विशेष संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर एक आलोचनात्मक अंतर्दृष्टि, आईजेआरएआर प्रकाशन, 2022, खंड-9, अंक-1।
- सिंह दुर्गेश, क्रॉनिकल मासिक पत्रिका, मई 2020, पृष्ठ संख्या 80-81
- प्रकाश कुमार, नई शिक्षा नीति 21वीं सदी की मांगों को पूरा करेगी, आउटलुक हिंदी, 24 अगस्त 2020
- प्रो. के.एल. शर्मा, दैनिक भास्कर जयपुर संस्करण, पृष्ठ संख्या 2। 24 अगस्त 2020
- प्रेम परिहार इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च, 2020, 6(9), पृ. 111
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
- राजस्थान पत्रिका नागौर, 28 जनवरी 2020, सम्पादकीय पृष्ठ 421
- तन्खा वरुण, सुप्रीम कोर्ट एडवोकेट, राजस्थान पत्रिका नागौर, 26 अगस्त 2020, संपादकीय पृष्ठ 45!
- गंगवाल सुभाष, नई शिक्षा नीति 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करेगी, दैनिक नवज्योति, पृष्ठ संख्या 4, 22 अगस्त 2020
- शिक्षा का वैदिक काल।" IJCRT, https://ijcrt.org/papers/IJCRT2408322.pdf.
- "वैदिक शिक्षा का इतिहास।" टीचमिंट ब्लॉग्स, https://blog.teachmint.com/vedic-education-all-you-need-to-know/.
- "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।" शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/NEP/NEP_2020_Final.pdf
- **डॉ. एस. बालमुरुगन और डॉ. आर. राजराजन का लेख 2018**"वैदिक काल की शिक्षा"